॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
555

श्रीमदीश्वरकृष्णविरचिता

साङ्ख्यकारिका

सान्वयानुवाद–माठरकृत'माठरवृत्ति'–गौडपादकृत'गौडपादभाष्य'–
शङ्करभगवत्पादकृत'जयमङ्गला'–वाचस्पतिमिश्रकृत–
'तत्त्वकौमुदी'–ईश्वरकृष्णकृत'युक्तिदीपिका'–
'नरहरि'नामधेयपर्यालोचना–
विस्तृतप्रस्तावनासहिता

व्याख्याकारः
डॉ. सुधांशु कुमार षडङ्गी
सहाचार्य
विश्वेश्वरानन्द विश्वबन्धु संस्कृत एवं भारत-भारती अनुशीलन संस्थान
पञ्जाव विश्वविद्यालय, साधु आश्रम,
होशियारपुर, पञ्जाव

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

विषयसूची

प्रस्तावना	v
आचार्य	vii
कृतियाँ	viii
तत्त्वविचार	xii
कार्य-कारणवाद	xiii
प्रमाणविवेचन	xvi
प्रकृति का स्वरूप	xviii
प्रकृति की सिद्धि	xix
पुरुष का स्वरूप	xx
पुरुष की सत्ता	xxi
पुरुष का बहुत्व	xxii
सृष्टिप्रक्रिया	xxiii
प्रत्ययसर्ग	xxiv
कैवल्य	xxv
साङ्ख्यकारिका	3-362
त्रिविध दुःख	3
लौकिक उपायों की निस्सारता	4
वैदिक उपायों के अनुपायत्व तथा त्रिविध तत्त्वों की श्रेष्ठता	12
पच्चीस तत्त्वों के चतुर्विध स्वरूप	20
मीमांसकादि प्रमाणों का खण्डन तथा साङ्ख्योक्तप्रमाणत्रैविध्य की स्थापना	23
पूर्वपक्ष खण्डनपूर्वक त्रिविध प्रमाणों के स्वरूप का निर्वचन	25
आगम-प्रमाण की श्रेष्ठता	35
कारिकोक्त 'तु' पद का विवेचन	37
पदार्थों की अनुपलब्धिता में कारण	38
कारणों की दोषरूपता	40
प्रकृति की उपलब्धि तथा अनुपलब्धि में हेतु	40
कार्यकारणवाद	42
पूर्वपक्ष निरसनपूर्वक सत्कार्यवाद की स्थापना	42
व्यक्त तथा अव्यक्त का वैधर्म्य	48
व्यक्त और अव्यक्त के साधर्म्य तथा पुरुष से वैधर्म्य	53
गुणों के स्वरूप	57
गुणों की वृत्ति	63

अविवेकी आदि की सिद्धि	66
अव्यक्त की कारणता की सिद्धि	69
पुरुष की सत्ता की सिद्धि	77
पुरुष के बहुत्व की सिद्धि	81
पुरुष के साक्षी आदि गुणों की सिद्धि	84
अचेतन लिङ्ग के चेतनवतीत्व में प्रमाण	86
सर्ग के हेतु	88
प्रकृति से सृष्टिक्रम का विवेचन	91
बुद्धि का स्वरूप तथा भेद	94
अहङ्कार का स्वरूप तथा द्विविध सर्ग का निर्वचन	99
द्विविध सर्ग-विवेचन	101
कर्मेन्द्रियाँ और ज्ञानेन्द्रियाँ	103
मन का स्वरूप	105
इन्द्रियों की वृत्तियाँ	109
करणों की द्विविध वृत्ति	110
वृत्ति में क्रमिकता	114
करणों की प्रवृत्ति में हेतु	116
करणों के स्वरूप तथा भेद	118
करणों का विषय	121
ज्ञानेन्द्रियों के विषय	123
करणों के गुणप्रधान भाव	125
बुद्धि की प्रधानता तथा उसमें हेतु	127
बुद्धि की विशेषता	128
विशेष तथा अविशेष तत्त्व विचार	131
स्थूल-सूक्ष्म विवेचन	133
लिङ्गशरीर का संसरण	137
भावों की आश्रयता की सिद्धि	139
भावों के विभाग	141
धर्मादि भावों से सूक्ष्मशरीर की गति	145
प्रत्ययसर्ग तथा भेद	150
विपर्ययादि के उपभेद	152
विपर्यय के भेदों का निर्वचन	153
अशक्ति के भेदों का निर्वचन	156
तुष्टि के भेदों का निर्वचन	158
सिद्धि के भेदों का निर्वचन	162

लिङ्गसर्ग तथा भावसर्ग में अन्योऽन्याश्रयता	167
भौतिकसर्ग विवेचन	169
चौदह सर्गों का विवेचन	171
पुरुष की दुःखप्राप्ति में कारण	172
प्रकृतिकृत सर्गप्रयोजन तथा द्विविध पुरुषार्थ-विवेचन	175
प्रकृति और पुरुष की अन्योऽन्यप्रवृत्ति में हेतु	177
प्रकृति की निवृत्ति में हेतु	180
प्रकृति की सुकुमारता	182
बन्ध और मोक्ष के अधिकारी	185
प्रकृति के बन्ध और मोक्ष में हेतु	187
तत्त्वज्ञानोत्पत्ति में हेतु	188
जीवन्मुक्ति	191
सर्ग की अनपेक्षता	192
विदेहमुक्ति तथा कैवल्य	197
साङ्ख्यकारिका के विषय	199
साङ्ख्यपरम्परा	200
ईश्वरकृष्ण को साङ्ख्यतत्त्वों की प्राप्ति	202
साङ्ख्यकारिका की निर्दुष्टता में उद्घोष	203
माठर की अतिरिक्त कारिका की कल्पना	204

युक्तिदीपिका गत विषयक्रम

शास्त्रप्रशंसा तथा प्रयोजन	208
शास्त्रगुणत्व	209
अवयव-निरूपण	209
शिष्यगुण-निरूपण	212
त्रिविध दुःख-निरूपण	213
अभिघात पदार्थ-निरूपण	213
त्रयपदार्थ-निरूपण	214
दृष्टोपाय की अपार्थता	219
वैदिकोपाय की हेयता तथा उसमें हेतु	221
हिंसा का अविशुद्धित्व	222
संन्यास का वेदविहितत्व	223
विध्यर्थवाद विचार	225
अपवर्ग विचार	228
त्रिविधतत्त्व की श्रेष्ठता	229
मूलप्रकृति स्वरूप-विचार	232

मूलप्रकृति पदार्थ विचार	234
प्रकृतिविकृतियों के सप्तत्व में युक्ति	235
सोलह विकारों का निरूपण	235
प्रामाण स्वरूप-निरूपण	237
'प्रमाणाद्धि' कारिकांश में 'हि' पद का औचित्य	238
प्रमाणों के त्रैविध्यत्व	239
त्रिविध प्रमाणों में अन्य प्रमाणों का अन्तर्भाव	239
दृष्टप्रमाण-विचार	243
कारिकोक्त अध्यवसाय-पद का तात्पर्य	245
त्रिविधानुमान-विचार	247
आगमप्रमाण-विचार	249
अनुमान में अवयव-निरूपण	250
उपलब्ध पदार्थों की अनुपलब्धिता में कारण	255
प्रकृति की उपलब्धि में कारण	258
कार्यकारणवाद में पूर्वपक्ष	259
सत्कार्यवाद की स्थापना	263
व्यक्त और अव्यक्त का वैधर्म्य	268
त्रिविध गुण-निरूपण	273
गुणों की वृत्ति	274
अव्यक्त की सिद्धि	276
परमाणुकारणतावाद-निरूपण	283
पाशुपतवैशेषिकाभिमत ईश्वरकारणतावाद का खण्डन	286
काल के जगत्कारणत्व निरास	289
परिणाम पदार्थ विचार	290
पुरुष की सत्ता	292
पुरुषबहुत्व की सिद्धि	298
पुरुष में साक्षित्व आदि की सिद्धि	299
पुरुष-प्रकृतिसंयोग-विचार	305
सर्गक्रम	307
बुद्धि के लक्षण तथा भेद	310
अभिमान के लक्षण तथा उससे द्विविध सृष्टि-विचार	312
ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों का निरूपण	314
मन का स्वरूप	315
इन्द्रियों का व्यापार	316
करणों की वृत्ति	325

करणों की प्रवृत्ति में हेतु	326
करणों के स्वरूप तथा भेद	328
करणों के विषय	329
करणों के गुणप्रधानभाव	331
बुद्धि का वैशिष्ट्य	332
विशेष तथा अविशेष तत्त्व	333
स्थूल-सूक्षशरीर विवेचन	335
सूक्ष्मशरीर की संसृति	337
भावों के विभाग	340
धर्मादि भावों से सूक्ष्मशरीर का संसरण	341
प्रत्ययसर्ग	342
विपर्ययादि के स्वरूप तथा उपभेद	343
लिङ्गसर्ग तथा भावसर्ग में अन्योऽन्याश्रयता	352
भौतिकसर्ग	353
बन्ध	354
अचेतन प्रकृति की प्रवृत्ति में हेतु	357
जीवन्मुक्ति	359
विदेहमुक्ति	360
साङ्ख्य के विषय	360
साङ्ख्य परम्परा तथा आचार्य ईश्वरकृष्ण	361
साङ्ख्यकारिका का वैशिष्ट्य	362
मूलकारिका	363
कारिकानुक्रमणी	368